

ह, किस तरह जाना जाता है, यह जानकारी भी जाननी होगी।
रचना किस प्रक्रिया में होती है, यह जानकारी भी जाननी होगी।
भी पता चलेगा कि शब्द रचना के विभिन्न तरीकों का प्रयोग कब और कैसे किया जाता है
तथा विभिन्न शब्दों के विशिष्ट अर्थ किस प्रकार रूढ़ हो जाते हैं।

4.2 शब्द से तात्पर्य

भाषा की स्वतंत्र तथा सार्थक इकाई को "शब्द" कहते हैं। आप पढ़ चुके हैं कि प्रत्येक भाषा की अपनी कुछ ध्वनियाँ होती हैं। इन ध्वनियों को वर्णों अथवा अक्षरों के रूप में व्यवस्थित किया जाता है। एक से अधिक ध्वनियों के मेल से अक्षर बनते हैं ये अक्षर एक पूर्ण ध्वनि तो होते हैं लेकिन अपने आप में कोई अर्थ नहीं रखते। जैसे, यदि "ए" और "क" दो अक्षरों का अलग-अलग उच्चारण करें तो सुनने वाले को इनसे कोई अर्थ प्रकट नहीं होगा, लेकिन इन दो अक्षरों को यदि एक साथ जोड़ दें और कहें "एक" तो सुनने वाले को निश्चित अर्थ की प्रतीति होगी। इस तरह, "स" "र" "ल" तीन अक्षरों से अलग-अलग कोई अर्थ प्रकट नहीं होता, लेकिन इनको मिलाकर लिखने या बोलने से एक शब्द बनता है - "सरल" जिससे एक निश्चित अर्थ प्रकट होता है।

आपने देखा कि अक्षरों के समूह से शब्द बनते हैं, जो अपने आप में सार्थक होते हैं, लेकिन अक्षरों का हर समूह शब्द नहीं हो जाता। "सरल" के स्थान पर यदि "रलस" अथवा "लरस" लिखा जाए तो यह निरर्थक अक्षर समूह होगा। इस तरह ध्यान रखना होगा कि अक्षरों का वही समूह शब्द कहलाता है जिससे किसी अर्थ का बोध हो। साथ ही, एक बात और ध्यान देनी होगी कि कभी-कभी एक अक्षर अपने आप में ही शब्द होता है जैसे "आ", "न" आदि। इन दोनों अक्षरों से अर्थ का बोध होता है। अतः यह दोनों ही अक्षर होने के साथ-साथ शब्द भी हैं।

शब्द, भाषा की अत्यधिक महत्वपूर्ण इकाई है। जिस भाषा में जितने अधिक शब्द होंगे, उतने ही अधिक अर्थ-क्षेत्रों को व्यक्त करने की क्षमता उसमें होगी। अतः समृद्ध भाषा की पहचान यही है कि उसका शब्द भंडार व्यापक हो, उसमें जीवन की विविध स्थितियों, प्रसंगों और संदर्भों के अनुकूल अभिव्यक्ति की क्षमता हो। भाषा का प्रयोग जितने अधिक क्षेत्रों में विस्तृत होता है, उतने ही क्षेत्रों के अनुकूल उसकी शब्दावली का विकास होता जाता है।

आपने पिछली इकाइयों में पढ़ा होगा कि शब्द भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है। साथ ही, एक अर्थ के लिए भिन्न-भिन्न शब्द प्रयुक्त होते हैं। आपके मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि एक ही अर्थ के लिए विभिन्न शब्दों के प्रयोग की क्या आवश्यकता है, अथवा एक ही शब्द से अनेक अर्थ क्यों लिए जाते हैं? यदि आप गौर करें तो पाएंगे कि समानार्थक होने के बावजूद शब्दों का प्रयोग समान नहीं होता। जैसे "कीचड़" और "पंक" दोनों शब्द एक ही अर्थ के द्योतक हैं लेकिन "कीचड़" का प्रयोग आम बोलचाल में होता है, जबकि "पंक" का प्रयोग साहित्य के क्षेत्र में ही होता है।

इसी तरह, एक शब्द का अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग अर्थ होता है। अर्थ ग्रहण करते समय उन संदर्भों को समझना अत्यंत आवश्यक होता है। जैसे, नीचे लिखे वाक्यों को देखिए जिसमें "पद" शब्द के दो संदर्भों में दो भिन्न अर्थ हैं :

- i) उसने मीरा का पद गाया।
- ii) वह अधीक्षक पद पर नियुक्त हुआ।

कहने का तात्पर्य यह है कि किसी शब्द का अर्थ-बोध करते समय शब्दकोश और प्रयोग-संदर्भ, दोनों का ध्यान रखना जरूरी है क्योंकि जैसे ही किसी भाषा विशेष का प्रयोग करने वाले किसी नए विचार, संकल्पना अथवा स्थिति से जुड़ते हैं वैसे ही उसकी अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त शब्दों के निर्माण की जरूरत उन्हें पड़ती है।

4.3 शब्द रचना

हिंदी की शब्दावली में चार स्रोतों से शब्द आए हैं - तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी। यानी कुछ शब्द ऐसे हैं जो संस्कृत से सीधे आए हैं। इन्हें तत्सम शब्द कहते हैं। उदाहरण के लिए "विद्वान्", "सम्राट्", "शिक्षक", आदि। कुछ शब्द ऐसे हैं जिनका मूल तो संस्कृत भाषा में है किंतु हिंदी में उन्हें नया रूप, नई वर्तनी और उच्चारण प्राप्त हो गया। जैसे "खेत", "किसान", "आग"। कुछ शब्द संस्कृत अथवा प्राकृत मूल के नहीं; हिंदी के अपने यानी उसकी अपनी बोलियों के हैं। जैसे "खिड़की", "ठेस"। कुछ शब्द विदेशी भाषाओं से प्राप्त हुए हैं। विदेशी शब्दों में अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं से आए शब्द शामिल हैं। जैसे "चश्मा", "औरत", "मुकदमा", "अदालत", "कमरा", "पादरी", "अपील", "गिलास", "टिकट", "लालटेन", "रेस्तरां"।

आप जानते हैं कि शब्दों के संज्ञा, क्रिया, सर्वनाम आदि आठ भेद होते हैं जिनमें से 4 को विकारी शब्द कहा जाता है तथा 4 को अविकारी शब्द अथवा "अव्यय" कहा जाता है। विकारी शब्द वे हैं जिनका रूपांतरण किया जाता है। इन शब्दों की रूप-रचना में व्याकरणिक जरूरतों के लिए परिवर्तन होता है। संज्ञा से क्रिया अथवा विशेषण बनाने या क्रिया से विशेषण बनाने के लिए शब्द का रूप बदलता है जैसे "लड़का", "लड़ाई", "लड़ाकू" में। लिंग, पुरुष, वचन, कारक, क्रिया तथा विशेषण के अनुरूप इनकी रूप-रचना बदलती है। जैसे "लड़की" से बहुवचन बनता है - "लड़कियाँ" और पुल्लिंग "लड़के"। इसी प्रकार, "सुंदर" एक विशेषण शब्द है। इससे संज्ञा बनी "सुंदरता"। आपने गौर किया होगा कि इस प्रक्रिया में शब्दों में दो तरह के परिवर्तन हुए - एक तो "याँ" तथा "ता" को जोड़ा गया, दूसरे "लड़की" में प्रयुक्त दीर्घ "ई" ध्वनि "लड़कियाँ" में ह्रस्व हो गई। इसी तरह, लड़का के अंत में प्रयुक्त "आ" ध्वनि "ए" में बदल गई है। अविकारी शब्दों का रूपांतरण नहीं होता। रूपांतरण के लिए शब्द में प्रयुक्त अक्षरों में परिवर्तन किए जाते हैं।

शब्द की रचना अथवा व्युत्पत्ति को समझने के लिए पहले शब्दों के वर्गों की जानकारी उपेक्षित है। आइए इनसे परिचय प्राप्त किया जाए।

4.4 शब्दों के वर्ग

व्युत्पत्ति अथवा रचना के आधार पर शब्दों के तीन वर्ग किए जाते हैं :

- क) रूढ़
- ख) यौगिक
- ग) योग रूढ़

4.4.1 रूढ़ शब्द

जिन शब्दों के सार्थक खंड न किए जा सकें, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं। हाथ, पैर, दिन, रात आदि के खंड करेंगे तो "हा", "थ" अथवा "पै", "र", "दि", "न", "रा", "त" जैसी निरर्थक ध्वनियाँ शेष रहेंगी। रूढ़ शब्द किन्हीं अन्य शब्दों के मेल से नहीं बने होते।

4.4.2 यौगिक शब्द

यौगिक शब्द वे शब्द होते हैं जो शब्दों अथवा शब्दावली के मेल से बनते हैं। मूल शब्द या धातु में कोई शब्दांश अथवा शब्द मिला देने पर बना नया शब्द "यौगिक शब्द" बनता है। इस प्रकार के शब्द, संधि या समास की प्रक्रिया से तथा उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर बनाए जाते हैं।

जैसे,

1. "परोपकार" शब्द "पर" तथा "उपकार" शब्दों की संधि से बना है।
2. "घुड़सवार", "घोड़े का सवार" शब्दों से बना समास है।
3. "अनुशासन" शब्द में "शासन" के साथ "अनु" उपसर्ग जुड़ा है।

4.4.3 योग रूढ़ शब्द

जिस यौगिक शब्द से किसी रूढ़ अथवा विशेष अर्थ का बोध होता है, उसे योग रूढ़ शब्द कहते हैं। जैसे "जलज" का शाब्दिक अर्थ है - "जल से उत्पन्न हुआ"। जल से अनेक चीजें उत्पन्न होती हैं। जैसे मछली, जोंक, कमल आदि। किंतु इस यौगिक शब्द का अर्थ रूढ़ हो गया है और इसे "कमल" के लिए ही प्रयोग करते हैं। इस प्रकार के शब्द "योग रूढ़ शब्द" कहलाते हैं।

बोध प्रश्न-1

1. शब्द किसे कहते हैं ? वर्ण और शब्द में क्या अंतर है ?

.....
.....
.....

2. निम्नलिखित शब्द किन-किन वर्णों से मिलकर बने हैं :

शलभ
आभा
रचना
विधान

3. निम्नलिखित शब्दों के विभिन्न संदर्भों में दो भिन्न-भिन्न अर्थ बताइए :

अर्थ
विधि

4. निम्नलिखित में से किन शब्दों की रूप रचना में व्याकरणिक जरूरतों से परिवर्तन होता

है। सह

i) र

ii) र

iii) र

5. शब्दों

4.5 श

शब्दों की

एक शब्द

इनके मेल

4.5.1

धातु वह

बनाए जा

मूल शब्द

जैसे एक

गया -

4.5.2

जो शब्द

है - "र

है कि

अथवा

अक्षर

"गुण"

लगा है

में का

हैं औ

लेकिन

संबंध

का र

होता

होता

होता

होता

होता

होता

होता

होता

होता

होता

होता

होता

होता

होता

होता

होता

शब्द का पर्याय लो जाता है। जब कभी शब्द का प्रयोग होता है तो वह लक्ष्य भाषा में उसका समुचित अनुवाद करता है।

अस्पष्ट होती है तो वह लक्ष्य भाषा में उसका समुचित अनुवाद करता है।

परिभाषा कोश उसकी सहायता करते हैं।

5.3 पारिभाषिक शब्द से तात्पर्य

प्रयोग के आधार पर शब्दों के तीन प्रकार होते हैं- (1) सामान्य शब्द, (2) अर्थ-पारिभाषिक शब्द, तथा (3) तकनीकी/पारिभाषिक शब्द।

1) सामान्य शब्द

सामान्य शब्दों की श्रेणी में उन शब्दों को रखा जा सकता है जिनका इस्तेमाल हम दिन-प्रतिदिन के सामान्य व्यवहार में करते हैं। जैसे वस्तुओं, स्थानों, संबंधों आदि के वाचक शब्द। इनका संबंध मूलतः मूर्त वस्तुओं, स्थितियों अथवा अवस्थाओं से होता है। किताब, कलम, घर, विद्यालय, बुढ़ापा, बचपन आदि सामान्य शब्द हैं।

2) अर्थ-पारिभाषिक शब्द

अर्थ-पारिभाषिक शब्द उन शब्दों को कहा जाता है जो सामान्य और पारिभाषिक, दोनों रूपों में प्रयुक्त होते हैं। अर्थात् सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त होने के अलावा, किसी क्षेत्र-विशेष के संदर्भ में भी उनका इस्तेमाल पारिभाषिक शब्द के रूप में किया जाता है। उदाहरण के लिए हम "आदेश", "दावा", "रस" आदि शब्दों को ले सकते हैं।

3) तकनीकी/पारिभाषिक शब्द

तकनीकी शब्दों के पीछे कोई विचार या संकल्पना जुड़ी होती है। ये, वे शब्द होते हैं जिनकी निश्चित परिभाषा दी जा सके, अर्थात् जिनकी सीमाएँ बाँध दी गई हों। जिनका किसी क्षेत्र-विशेष में एक निश्चित अर्थ सीमित कर दिया गया हो और उस क्षेत्र-विशेष में उन्हें उसी अर्थ में प्रयोग किया जाता हो, किसी अन्य अर्थ में नहीं। जैसे एक शब्द है - "आयकर"। इस शब्द का प्रयोग किसी व्यक्ति अथवा संस्था की आय पर सरकार द्वारा वसूल

अर्थ प्रचलित हो, लेकिन यदि वह तकनीकी शब्द के रूप में विकसित हो जाता है कि तकनीकी शब्द का एक विषय-क्षेत्र में एक तकनीकी अर्थ होगा। इसीलिए कहा जाता है कि तकनीकी शब्द "एक शब्द एक अर्थ" के सिद्धान्त का अनुसरण करता है। उदाहरण के लिए, "भौतिकी" आदि "ऊर्जा" (energy) शब्द का एक ही विशिष्ट अर्थ होगा जो "शक्ति", "ताकत", "स्फूर्ति" आदि शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता। यदि एक ही विषय या व्यवहार क्षेत्र में किसी तकनीकी शब्द के दो या अधिक अर्थ हों तो वह तकनीकी अर्थ व्यक्त करने के दायित्व का निर्वह नहीं कर पाएगा।

ख) अर्थ की सूक्ष्मता : सामान्य शब्द की अर्थ-व्याप्ति अधिक व्यापक होती है, क्योंकि इसमें मुख्य अर्थ के अलावा कई गौण अर्थ भी निहित होते हैं। इस प्रकार, सामान्य या साहित्यिक शब्दों के अर्थ की संभावनाएँ बहुत अधिक व्यापक होती हैं। तकनीकी शब्द न केवल एक अर्थ को व्यक्त करता है, बल्कि वह उस अर्थ के भी एक सूक्ष्म अंश का अर्थ-बोध प्रकट करता है। यह विज्ञान की विशेषता है जो भाषा में ही तक्षित होती है। जैसे-जैसे वैज्ञानिक और तकनीकी सोच तथा संकल्पना में परिगर्जन होता जाता है और नई भौतिक उद्भावनाएँ सामने आती जाती हैं, वैसे-वैसे तकनीकी शब्द का अर्थ भी सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होता जाता है। अंग्रेजी शब्द "प्रोग्राम" और "मेमोरी" के जो अर्थ लोक-व्यवहार में प्रचलित हैं, वे कंप्यूटर विज्ञान के संदर्भ में अत्यन्त सीमित हो गए हैं। "संसद" का अर्थ संस्कृत में "सभा" हुआ करता था, लेकिन तकनीकी शब्द बनने के बाद इसकी अर्थ व्याप्ति "पार्लियामेंट" तक सीमित हो गयी है।

ग) अर्थ भेदकता : तकनीकी शब्दों के अर्थ न केवल सूक्ष्म होते हैं बल्कि निरन्तर अनुसंधान के साथ-साथ उनके अर्थ के भेद-उपभेद विकसित होते चले जाते हैं। अर्थ के इन भेदोपभेदों में भी सूक्ष्म अर्थ-भेद होता है। इन अर्थ-भेदों को सुरक्षित रखने के लिए सबके लिए अलग-अलग तकनीकी शब्दों का विधान करना जरूरी हो जाता है। सामान्य व्यक्ति के लिए यह भेद महत्त्वपूर्ण न हो, लेकिन वैज्ञानिक या विशेषज्ञ के लिए यह भेद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। नीचे दिए गए शब्द देखिए :

वेग	velocity	किरण	ray
चाल	speed	विकिरण	radiation
गति	movement	किरण पुंज	beam
ऊर्जा	energy	महामारी	epidemic
शक्ति	power	विषममारी	pandemic
ओज	vigour	लघुमारी	endemic

जिस समूह "महामारी" (epidemic) शब्द बना उस समय pandemic और endemic शब्दों का अस्तित्व नहीं था। किसी समुदाय में रोग-विशेष के असामान्य रूप से फैलने को "महामारी" कहते हैं। जब महामारी संसार के कई भागों या देशों में एक साथ फैली हो तो उसे तकनीकी अर्थ में pandemic कहा गया, जिसके लिए हिन्दी में "विषममारी" शब्द बनाया गया। जब कोई बीमारी किसी छोटे क्षेत्र या समुदाय में छुट-पुट रूप से लगातार मौजूद रहती है तो उसे endemic कहा गया जिसके लिए हिन्दी शब्द बना - "लघुमारी"। इस प्रकार आप पाते हैं कि तकनीकी शब्दों के अर्थों में धीरे-धीरे नए मूल्य विकसित होते रहते हैं और उनमें परस्पर अभिन्नता का गुण मुखर होता जाता है।

घ) विषय सापेक्षता : हर तकनीकी शब्द किसी न किसी विषय-क्षेत्र या शास्त्र से सम्बद्ध होता है। वह शब्द अपने विषय-क्षेत्र से ही अपना तकनीकी अर्थ और अपनी परिभाषा प्राप्त करता है। इसलिए किसी भी विषय के तकनीकी शब्द के पूर्ण अर्थ को समझने के लिए उस विषय की जानकारी जरूरी है। यही कारण है कि तकनीकी शब्दों को विशेषज्ञों की शब्दावली कहा जाता है जिन्हें अक्सर उस विषय से अभिन्न सामान्य व्यक्ति नहीं समझ सकता। कोई भी तकनीकी शब्द

अपने विषय-क्षेत्र से जो अर्थ प्राप्त करता है वह सब उसकी परिभाषा में निहित रहता है। इसलिए परिभाषा के माध्यम से ही तकनीकी शब्द की अर्थ-व्यक्ति को समझा जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो हर तकनीकी शब्द परिभाषा की अपेक्षा करता है। इसीलिए उसे "पारिभाषिक शब्द" कहा गया है - अर्थात् ऐसा शब्द जो परिभाषा के माध्यम से ही पूर्ण रूप से समझा जा सकता है। 'कम्प्यूटर वाइरस', 'प्रोग्रामिंग', 'हार्ड डिस्क' तथा 'फ्लॉपी' जैसे तकनीकी शब्द कम्प्यूटर विज्ञान के संदर्भ में ही समझे जा सकते हैं। 'ओवर ड्राप्ट', 'रेखित चैक', 'धारक चैक' आदि तकनीकी शब्द बैंकिंग व्यवहार-क्षेत्र के संदर्भ में ही समझे जा सकते हैं। यह संभव है कि एक ही तकनीकी शब्द एक विषय-क्षेत्र में एक विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त हो और दूसरे विषय-क्षेत्र में किसी और अर्थ में, लेकिन यह संभव नहीं कि एक ही विषय-क्षेत्र में एक ही तकनीकी शब्द दो भिन्न अर्थों में प्रयुक्त हो। 'सॉफ्टवेयर' का अर्थ समस्त कम्प्यूटर विज्ञान क्षेत्र में एक ही होगा, 'ऊर्जा' शब्द का अर्थ समस्त भौतिकी में एक ही होगा। (अंग्रेजी शब्द *charge* का अर्थ भौतिकी या रसायन विज्ञान में 'आवेश' या 'चार्ज करना' होगा जिसे बैटरी चार्ज करना), वाणिज्य में 'व्यय', 'राजनीति विज्ञान में 'धावा', विधि में 'आरोप' और प्रशासन में 'कर्मभार' या 'प्रभार'। लेकिन एक ही विषय या प्रसंग में इसका एक ही रूढ़ अर्थ होगा।

(इ) अर्थरूढ़िवा : नए विचारों, आविष्कारों या संकल्पनाओं को व्यक्त करने के लिए जब हमें नए शब्दों की आवश्यकता होती है तो इसके दो प्रमुख उपाय हैं - नये शब्दों का निर्माण या फिर पहले से ही भाषा के शब्द-भंडार में मौजूद निकटतम अर्थ देने वाले शब्द का चयन कर उसे नया अर्थ प्रदान करना। दोनों ही स्थितियों में शब्दों में नए अर्थों का आरोपण किया जाता है। जो भी नया तकनीकी अर्थ, शब्द में आरोपित किया जाता है तो वह सतत् प्रयोग के कारण उस शब्द के साथ रूढ़ हो जाता है और लोग उसी अर्थ में उस शब्द को ग्रहण करने लग जाते हैं। कभी-कभी यह भी होता है कि उस तकनीकी शब्द से जो सामान्य अर्थ प्रकट होता है वह उसके तकनीकी अर्थ से पूरी तरह मेल नहीं खाता। छद्महारण के लिए, कम्प्यूटर के पर्दे पर रेखाएँ खींचने के लिए एक चूहे की तरह के एक छोटे से उपकरण का इस्तेमाल किया जाता है जिसे 'mouse' नाम दिया गया है। इसे मेज पर रखे एक स्केट पर इधर-उधर घुमाया जाता है और पर्दे पर इच्छित रेखाएँ खिंची जाती हैं। (अंग्रेजी में mouse का यह मूल अर्थ नहीं। इस शब्द पर आविष्कारकर्ता ने एक नया अर्थ आरोपित कर दिया और एक नया तकनीकी शब्द बन गया।) अतः तकनीकी शब्द और अर्थ के बीच का संबंध किसी तर्क या विधान के अन्तर्गत स्थिर हो यह जरूरी नहीं। इस संबंध को स्थापित करने में मूल संकल्पना के आविष्कारकर्ता का सबसे बड़ा हाथ होता है। धीरे-धीरे सतत् प्रयोग और व्यवहार से तकनीकी शब्द और अर्थ के बीच का संबंध रूढ़ हो जाता है।

बोध प्रश्न-2

1. सामान्य शब्दों और तकनीकी शब्दों में क्या समानता है ?

2. सामान्य शब्द, तकनीकी शब्दों से किस प्रकार भिन्न होते हैं ?

किए जाने वाले "कर" के अर्थ में किया जाएगा। सरकार से भिन्न किसी संस्था द्वारा वसूल की जाने वाली राशि आयकर नहीं कहलाएगी।

तकनीकी शब्दों के पीछे कोई न कोई संकल्पना जुड़ी होती है। अतः उनकी परिभाषा की जा सकती है इसलिए उन्हें "पारिभाषिक शब्द" भी कहा जाता है। वस्तुतः "पारिभाषिक" शब्द, हिंदी में ज्यादा प्रचलित है। खास तौर पर शब्दावली के साथ पारिभाषिक विशेषण ही अधिक चलता है।

आपने देखा होगा कि "वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग" नाम में Technical के लिए "तकनीकी" पर्याय प्रयुक्त है। लेकिन इसके द्वारा तैयार किए गए शब्दकोशों के अंग्रेजी-हिंदी में लिखे नाम ही देखिए :

'Comprehensive Glossary of Technical Terms'

'बृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह'

इस तरह हिंदी में "तकनीकी" और "पारिभाषिक" दोनों ही शब्द अंग्रेजी के 'Technical' शब्द के पर्याय हैं। "तकनीकी" ध्वनि-साम्य के आधार पर निर्मित पर्याय है जबकि "पारिभाषिक" उससे जुड़े अर्थ के आधार पर बनाया गया पर्याय है। Technical Terminology के दोनों ही पर्यायों को आपको ध्यान में रखना चाहिए। अंग्रेजी का Technical शब्द Technique से बना है जो वस्तुतः ग्रीक भाषा के 'Technika' से आया है। ग्रीक शब्द का अर्थ है किसी चीज के बनाने या तैयार करने की कला अथवा शिल्प। अंग्रेजी का Technique भी इसी अर्थ का वहन करता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पारिभाषिक शब्द से तात्पर्य उस शब्द से है जो किसी क्षेत्र विशेष में एक निश्चित और परिसीमित अर्थ के द्योतक हों जिनके पीछे कोई संकल्पना, प्रतिपादित विचार या घटना जुड़ी हुई हो। उसकी परिभाषा या व्याख्या की जा सकती हो तथा उस भाषा के प्रयोक्ताओं को वह उसी अर्थ में स्वीकार्य हो।

किसी भाषा की पारिभाषिक शब्दावली का सीधा संबंध उस भाषा-भाषी समाज के सांस्कृतिक और वैचारिक विकास से होता है। जैसे-जैसे उस जन-समुदाय का जीवन विकास की ओर बढ़ता जाता है, भाषा में भी नई संकल्पनाओं का विकास होता जाता है। परिणामस्वरूप उन संकल्पनाओं की पारिभाषिक शब्दावली विकसित होती जाती है। इस तरह विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, दर्शन, साहित्यशास्त्र, कला, वाणिज्य, प्रशासन आदि विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों में चिंतन और व्यवहार के माध्यम से विभिन्न संकल्पनाएँ विकसित होती हैं और उनकी अभिव्यक्ति क्षेत्र-विशेष की पारिभाषिक शब्दावली द्वारा होती है। समाज जिन-जिन क्षेत्रों में विकास करेगा, उन-उन क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली उस समाज की भाषाओं में विकसित होगी। किसी समाज का सांस्कृतिक-वैज्ञानिक विकास और भाषा-विकास इसी दृष्टि से एक-दूसरे से अभिन्न होते हैं।

बोध प्रश्न-1

1. अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता क्यों पड़ती है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2. शब्दों के तीन प्रकार कौन-से हैं ?

.....

.....

इन वाक्यों में “लहरें”, “किरण”, “पहाड़” और “गरजे” का प्रयोग अभिधापरक अर्थ में नहीं हुआ है। यहाँ इनका प्रयोग लाक्षणिक है। विज्ञान की भाषा में ये शब्द तकनीकी हैं और इनके अर्थ शाब्दिक हैं। पाठक भी इन्हें अभिधार्थ में ही ग्रहण करता है। अतः जहाँ सामान्य तथा साहित्यिक भाषा में शब्दों के अर्थों को विस्तारित कर उनके मूल अर्थों से उन्हें विचलित किया जा सकता है, वहाँ तकनीकी तथा वैज्ञानिक संदर्भों में शब्दों को उनके मूल अर्थ में स्थिर किया जाता है और उनके अर्थों में किसी भी तरह का विचलन नहीं आने दिया जाता। इस प्रकार, तकनीकी शब्दों के अर्थों में एक प्रकार की वस्तुनिष्ठता होती है जिसमें लेखक अथवा वक्ता के व्यक्तिगत भावों या दृष्टिकोणों के लिए कोई स्थान नहीं होता। आगे के अनुच्छेद में तकनीकी शब्दों की इन विशिष्टताओं पर हम विस्तार से चर्चा करेंगे।

5.5 पारिभाषिक शब्द के लक्षण

अब प्रश्न यह उठता है कि अपनी किन विशेषताओं के कारण कोई शब्द पारिभाषिक शब्द बनता है, दूसरे शब्दों में किस दृष्टि से वह सामान्य शब्दों से विशिष्ट होता है। इसके लिए हमें जानना होगा कि पारिभाषिक शब्दों से क्या अपेक्षाएँ हैं :

- पारिभाषिक शब्द का अर्थ किसी ज्ञान-विशेष के क्षेत्र में नियत और निश्चित होना चाहिए।
- एक प्रमुख अर्थ को व्यक्त करने वाला एक ही शब्द होना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि पारिभाषिक शब्दों के पर्यायवाची नहीं होते। उदाहरण के लिए, “पानी”, “जल”, “नीर” तीन शब्दों का इस्तेमाल एक-दूसरे की जगह हो सकता है लेकिन “अधिकारी”, “प्राधिकारी”, “कर्मचारी” शब्दों का एक-दूसरे के पर्याय के रूप में प्रयोग नहीं किया जाता।
- पारिभाषिक शब्द को अपने आप में स्पष्ट और असंदिग्ध होना चाहिए।
- एक संकल्पना के लिए एक ही शब्द होना चाहिए।
- किसी भाषा के पारिभाषिक शब्द भाषा की प्रकृति और उच्चारण पद्धति के अनुकूल होने चाहिए। यह बात खास तौर पर उन शब्दों के संदर्भ में ध्यान रखने की है जिन्हें अन्य भाषाओं से लिया गया हो। उदाहरण के लिए, जो शब्द हिन्दी भाषा में चल पड़े हैं, वे तो उसकी प्रकृति के अनुरूप ढल गए हैं लेकिन जो बहुत अधिक प्रयोग में नहीं आए हैं या जिनकी जरूरत अक्सर नहीं पड़ती है, उनका अनुकूलन अपेक्षित होता है। यह अनुकूलन रचना और उच्चारण, दोनों ही स्तरों पर किया जाता है।

इस प्रकार, अर्थ और प्रयोग के स्तर पर तकनीकी शब्दों के कुछ खास गुण-धर्म होते हैं जो इन्हें गैर-तकनीकी शब्दों से अलग करते हैं। वैज्ञानिक तथा तकनीकी संदर्भों में सामान्य शब्द भी विशिष्ट अर्थ व्यक्त करने की क्षमता विकसित कर लेता है। वैज्ञानिक सन्दर्भों में अर्थों और संकल्पनाओं में सूक्ष्मता की आवश्यकता पड़ती है, इसलिए इन सूक्ष्म अर्थों को व्यक्त करने के लिए अनेक शब्दों की जरूरत पड़ती है जो किसी भी भाषा के शब्द भंडार में सम्भव नहीं। इसलिए जहाँ नए शब्द बनाने अथवा सृजित करने की सम्भावना नहीं होती, वहाँ प्रचलित शब्दों को ही एक नया अर्थ अथवा अर्थ छटा प्रदान कर दी जाती है। इस प्रकार, तकनीकी शब्दों में नए अर्थों का आरोपण एक सतत प्रक्रिया है। अर्थ का सूक्ष्म और सूक्ष्मतरंग होना तकनीकी शब्दों की विशेषता है। यहाँ हम तकनीकी शब्दों के विशिष्ट लक्षणों की चर्चा करेंगे :

क) **अभिधार्थ प्रयोग** : वैज्ञानिक और तकनीकी शब्द हमेशा अभिधार्थ में ही समझे जाते हैं। यह संभव है कि सामान्य प्रयोग में या अलग-अलग संदर्भों में किसी शब्द के एक से अधिक